संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२१ ● अंक : १६ ● १६ अप्रैल, २०१६ चैत्रकृष्ण त्रयोदशी सम्वत् २०७३ ● दयानन्दाब्द १६२ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११७

आर्य समाज की जरूरत आज पहले से ज्यादा -देवेन्द्रपाल वर्मा, सभा प्रधान

शहर आर्य समाज मुजफ्फरपुर नगर की स्थापना दिवस एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के प्रधान पद पर निर्विरोध चुने जाने पर अपने स्वागत समारोह के अवसर पर बोलते हुए प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि ''भारत की आजादी के पूर्व हमारी लड़ाई मुख्य रूप से अंग्रेजी शासन के विरूद्ध थी। हिंदू मुसलमान सभी ने मिल कर समान रूप से स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। उस समय भी स्वामी जी ने स्वतंत्रता की पुरजोर वकालत की थी और असंख्य सेनानी तैयार किये थे जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए आजादी की लड़ाई लड़ी। लाखों बलिदानों के बाद अपना देश आजाद हुआ। उनके शिष्यों ने विदेशो में रहकर भारत की आजादी के रण बांकुरे तैयार किये जिन्होंने अंग्रेजों का जीना हराम कर दिया। हमारी आजादी से पूर्व हमारा एक ही शत्रु अंग्रेज थे। आज स्वतंत्रता के पश्चात कदम कदम पर हमारे दुश्मन हैं। महर्षि का मुख्य उद्देश्य लोगों को पाखण्ड, ढोंग, आडम्बर से बचा कर एक ईश्वर की उपासना हेतु प्रेरित करना था। वेदों की विस्मृति हो चुकी छवि को अपने प्रबल प्रमाणों से पुनः स्थापित करना उनका मुख्य लक्ष्य था। वह इसमें सफल भी हुए। आज आपसी विश्वास, आडम्बरो का नया रूप, तंत्र साधना, पीरों की पूजा, घर बैठे आरती दर्शन, प्रसाद की प्राप्ति, मंदिरों मठों आदि की बढ़ती आमदनी, पुजारियों व मठाधीशों का ऐश्वर्य युक्त जीवन सोचने को मजबूर कर देता है कि ऋषि ने लोगों को जगाते जगाते अपने प्राणों की परवाह न की। वह चाहते तो मठाधीश बनकर समृद्धपूर्ण जीवन जी सकते थे। परंतु उन्होने उस ओर देखा तक नहीं अपने देश की दशा व दिशा सुधारने में लगे रहे।

आज स्थिति उससे अधिक भयावह हो रही है और हम लाचार एवं बेबस है क्योंकि आज अपने ही लोग षडयंत्र रच रहे हैं, देश का पूर्व का विभाजन कुछ लोगों की मूर्खता व लोभ के कारण हुआ था। लाखों परिवारों के घाव आज भी टीसते हैं। हम आर्यो को आज पुनः एकजुट होकर इस पाखण्ड व मातृभूमि के प्रति जन्म ले रही विघटनकारी ताकतों को कुचलना होगा। आज आर्य समाज की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है।

१० अप्रैल १८७५ में बम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना का यही उद्देश्य था।

इस आयोजन के संयोजक मंत्री श्री कस्तूर सिंह स्नेही, कोषाध्यक्ष श्री विजय गुप्ता जी थे। ठा. ओम पाल सिंह, श्री सुभाष मित्तल, श्री मुकुट गुप्ता, बबीता गुप्ता, सुशील राणा, प्रतिभा तायल,मांगे राम राणा, प्रमोद मित्तल, मोहिनी गुप्ता, श्री अजय वर्मा आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय है। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री वेदपाल शास्त्री जी ने की।

वेदामृतम्

अयं मित्रो नमस्यः सुशेवो, राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट वेधाः।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्य, अपि भद्रे सौमनसे स्याम।।

मित्र यह कैसा प्यारा शब्द है। इसे उच्चारण करते या सुनते ही मन माधुर्य से भर उठता है। सच्चा मित्र समय पर सगे संबंधी से भी अधिक हित-साधन करता है। मित्र को देखकर मनुष्य स्नेह से द्रवित हो जाता है। मित्र अपने सखा के लिए प्राणों तक का बलिदान कर देता है। जब लौकिक मित्र की यह महिमा है तब उस दिव्य मित्र परमात्मा की महिमा का भला कौन वर्णन कर सकता है। वह सुशेव है उतकृष्ट सुख का दाता है हम मानव तो अनेकों बार दुख को सुख मान बैठते हैं क्योंकि आपाततः वह रम्य प्रतीत होता है पर मित्र प्रभु जानता है कि हमारे लिए क्या सुख है और क्या दुख है। अतः उत्कृष्ट सच्चा सुख ही वह उन्हें प्रदान करता है, जो उससे सच्चा मैत्री सम्बन्ध स्थापित करते हैं। मित्र प्रभु राजा है विश्व का सम्राट है। मनुष्य किसी छोटे से पदाधिकारी को भी मित्र बनाने में गौरव अनुभव करता है फिर वह तो सम्राट है। उसकी मैत्री तो हमें धन्य और कृतकृत्य कर सकती है। वह सुक्षत्र है उत्तमतया विपदाओं से त्राण करने वाला है। गहरे से गहरे घावों में, गंभीर से गंभीर आपत्तियों में वह मित्र बनकर हमें स्नेह देता है और कष्ट से हमारा उद्धार करता है। मित्र प्रभु वेधा है विधाता है, सृष्टि का रचयिता है और समस्त जीवनोपयोगी वस्तुओं को हमारे लिए रचकर देने वाला है। हमें भले ही यह अभिमान हो जाता हो कि हम स्वयं अपने लिए उपयोगी पदार्थों को रचने में समर्थ है पर वस्तुतः हम तो इतने पंगु है कि मिट्टी का एक छोटा सा पात्र भी स्वयं बनाने में असमर्थ है। मिट्टी, जल, अग्नि हमें हमारे मित्र परमात्मा ने ही दी है जिससे कोई कुम्भकार स्वयं को मृत्पात्रों का निर्माता मानता है। जरा कुम्हार से यह तो कहकर देखों कि वह मिट्टी, जल, अग्नि आदि भी मित्र परमात्मा की रची हुई न लेकर स्वयं रचे। तब वह मित्र प्रभु के प्रति नत मस्तक हो जायेगा। मित्र प्रभु मेघावी भी है उसकी मेधा के दर्शन प्रकृति की प्रत्येक रचना में होते हैं। अपने गुणों और कर्तव्यों के कारण वह मित्र हम सबके लिए यज्ञिय है,पूजार्ह है आओ उस परम मित्र की हम पूजा करें और उसी से सुमति एवं भद्र सौमनस्य पाकर हम स्वयं भी जगत् में अन्यों के साथ मित्रता का व्यवहार करें, जिससे जगत् सुख शान्ति का परम धाम बन सके।

आर्य समाज शामली में 141वाँ स्थापना दिवस एवं अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज शामली में दि. ८, ९ व १० अप्रैल, २०१६ को आर्य समाज का १४१वाँ स्थापना दिवस व आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के यशस्वी प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा के निर्विरोध चुने जाने पर अभिनन्दन समारोह हर्षोल्लास पूर्वक धूमधाम से मनाया गया।

समारोह के अन्तिम दिन दि. १० अप्रैल को ३१ कुंडीय विराट यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य यजमान श्री मनीष चौहान सपत्नीक थे। तत्पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी के तीसरी बार निर्विरोध चुने जाने पर अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। जिसके संयोजक श्री वीरबल सिंह थे। श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी का स्वागत आर्य समाज शामली के प्रधान श्री राजपाल सिंह मंत्री, श्री दिनेश आर्य जी, डॉ. रवीन्द्र आर्य, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री पूरनचन्द्र आर्य, श्री रघुवीर सिंह आर्य, श्री यशपाल सिंह जी, श्री ज्ञानेन्द्र मलिक जी, श्री लक्ष्मी चन्द्र जी, श्री रामपाल सिंह जी, श्री रमेश मुखिया जी, श्री प्रदीप बनत, श्री सुशील आर्य, श्री धर्मवीर सिंह वर्मा, श्री विवेक आर्य, डॉ. विजेन्द्र सिंह आर्य, श्रीमती नीलम, श्रीमती प्रीती आदि ने किया। सभा को पलवल हरियाणा के सन्यासी आ० श्रद्धानन्द जी आदि ने सम्बोधित किया।

सम्बन्धित चित्र पृष्ठ.....८

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

आखिर कब चेतेंगे?

प्राकृतिक आपदाओं से तो मौसम विज्ञानी लोगों को सचेत कर देते हैं लेकिन कुछ चंद अमीर मठाधीश अपने मनोरंजन व रूढ़ियों के चलते लोगों की जिन्दगी दांव पर लगा देते हैं उन्हें कैसे रोक पायेंगे। प्रशासन भी बेबस व लाचार नजर आता है, कानून भी कुछ नहीं कर पाता।

गत रविवार प्रातः साढ़े तीन बजे केरल के कोल्लम स्थित पुत्तिंगल देवी मंदिर में आतिशबाजी के मुकाबले में हुए विस्फोट से ११२ लोगों की मृत्यु ८०० से ज्यादा लोग घायल हो गये। हर तरफ लोगों की चीख पुकार, तड़पते लोग, अंगों के चीथड़े, भयावह स्थिति का संकेत दे रहे थे। घटना के बाद हादसे की जांच करने पहुंचे मुख्य विस्फोट नियंत्रक श्री सुदर्शन कमल ने जो बताया उससे पुलिस व प्रशासन की पोल खुल गई। यानी आतिशबाजी प्रतियोगिता के दौरान सभी नियम कायदों को किनारे कर दिया गया था। बाद में पता चला कि पुलिस ने पहले इंकार करने के पश्चात बाद में दबाव में ६ अप्रैल को आतिशबाजी की अनुमति दी थी। यह दबाव किसका था जो सुप्रीम कोर्ट व पर्यावरण मंत्रालय के निर्देशों का उल्लंघन कर नियमों की धज्जियां उड़ाकर आम जन की जान माल से खिलवाड़ किया गया।

सरकार ने अविलम्ब मुआवजे का ऐलान कर इतिश्री कर ली। क्या इससे मरे हुए लोग जीवित हो जायेंगे?या जिनके अंग भंग हो गये है वे वापस आ जायेंगे?आखिर इन सड़ी गली मान्यताओं का उद्देश्य लोक हित तो नहीं हो सकता उल्टे धन की बर्बादी व पर्यावरणीय प्रदूषण तथा सैकड़ों लोगों की मौत सो अलग।

इस परम्परा के विरूद्ध एक वयोवृद्ध महिला पंकजाक्षी अम्मा पिछले चार सालों से विरोध प्रकट कर रही है। मंदिर प्रशासन व प्रबंधन गूंगे बहरे तो है ही धृतराष्ट्र की श्रेणी में भी आ गये हैं।

आज हमें जरूरत है इन व्यर्थ की परम्पराओं और मान्यताओं को समाप्त कर लोगों को जागरूक करने की। हमें दुःख होता है जब पढ़े लिखे युवा इन मान्यताओं को स्वीकार कर इनके पिछलग्गू बन जाते हैं। कोई ज्योतिषी तो कोई तांत्रिकों आदि के चक्कर में पड़ कर अपना समय व धन दोनों गंवा देते हैं उल्टे बाद में अपनी मूर्खता पर पश्चाताप करते हैं। इन्हें अपनी प्राचीन वैदिक पद्धति का ज्ञान नहीं होने के कारण इन मायाजालों में आसानी से फँस जाते हैं। हमारे वैदिक नियम ईश्वरीय देन है इसी पर प्राचीन ऋषि मुनियों ने काफी शोध कर ग्रंथों का प्रतिपादन किया है जो अनुकरणीय है।

इन कुरीतियों पाखंडों और आडम्बरों के विरूद्ध वैदिक मान्यताओं के जनक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने तो लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व ही बिगुल बजा दिया था। लोग अज्ञानतावश अंध परम्पराओं के वशीभूत होकर आये दिन इस तरह की दुर्घटनाओं के शिकार होते रहते हैं और पुनः उसी में लग जाते हैं।

वेदों में कहीं भी जड़ (मूर्ति) पूजा व इन अंध परम्पराओं का वर्णन नहीं मिलता है। केवल एक ईश्वर की ही उपासना का उल्लेख किया गया है।

आज जरूरत है हमें पुनर्विचार की कि हम इन सड़ी गली मान्यताओं को छोड़कर एक ईश्वर की भक्ति करें, उससे सारी शक्तियां प्राप्त करें। आखिर कब तक इन पंडे पुरोहितों को मालामाल करते रहेंगे।

-सम्पादक

गाय, गंगा, गायत्री की अन्यों से विशेष मान्यता क्यों?

गाय, गंगा, गायत्री ये तीनों अपने-अपने स्थान पर सब से श्रेष्ठ, सर्वोत्तम व सर्वोच्च हैं इनको हिन्दू धर्म यानि वैदिक धर्म में बहुत बड़ा महत्व ही नही बल्कि पूज्य माना गया है। हिन्दू धर्म ने जिन-जिन को मान्यता दी है। यह उनके गुणों व उसके महत्व को देख कर दी है। जैसे वृक्षों में पीपल, पौधों में तुलसी, पशुओं में गाय, पक्षियों में हंस, पहाड़ों में हिमालय, नदियों में गंगा, वैदिक मंत्रों में गायत्री। इन सबके पीछे इनके गुणों का पूरा इतिहास छिपा हुआ है। हम यहाँ केवल गाय, गंगा व गायत्री की मान्यता क्यों है, इसका संक्षिप्त वर्णन करते हैं -

१. गाय :- गाय को ईश्वर ने मनुष्य जाति को एक पशु के रूप में जैसे अन्य पशु भैंस, घोड़ा, बकरी, हाथी दिया है वैसे नहीं दिया बल्कि एक उपहार के रूप में दिया है, जिसको देकर ईश्वर ने मनुष्य जाति पर बड़ा उपकार किया है। कारण गाय मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा साथी या सहयोगी है जिससे मनुष्य अपने जीवन को उन्नत व समृद्धिशाली बनाता है, जिसके कारण वह अपने मन, बुद्धि, शरीर व आत्मा को बलिष्ठ तथा पवित्र बनाता है। गाय से उत्पन्न सभी पदार्थ ही नहीं बल्कि गाय का रोम-रोम मनुष्य के लिए लाभकारी है। गाय एक चलती-फिरती फैक्टरी है जिसका उत्पादन सस्ता व सुलभ है। कम परिश्रम में अधिक लाभ, गाय मनुष्य को देती है। गाय से अनेक लाभ हैं जिनमें कुछ लाभ यहां लिखते है।

गाय के दूध, घी, मक्खन व पनीर से अनेकों किस्म की मिठाईयां बनती हैं जिनको खाकर मनुष्य स्वयं आनन्दित होता है तथा अपने अतिथियों व बरातियों को भी आनन्दित करता है। गाय के गोबर व मूत्र से उच्चतम् खाद- बनती है जिससे उत्पन्न हुआ अनाज स्वादिष्ट व पोष्टिक होता है और जमीन भी उर्वरा होती है। कैमिकल से बनी यूरिया खाद से गाय के गोबर व मूत्र से बनी जैविक खाद कहीं अच्छी होती है। यूरिया खाद से जमीन की उर्वरा शक्ति हर साल कम होती जाती है जब कि जैविक खाद से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती जाती है। जब से भारत में यूरिया खाद का प्रयोग होने लगा है तभी से मात्रा में चाहे अनाज अधिक पैदा होने लगा हो परन्तु स्वादिष्ट व गुणयुक्त न होने से भारतीयों का स्वास्थ्य कमजोर हुआ है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां की ७० प्रतिशत जनता गांवों में रहकर कृषि करती है। देश में जब से यूरिया खाद का प्रयोग अधिक हुआ है तब से देश को बड़ी हानि उठानी पड़ी है। खुशी की बात है कि अब कुछ वर्षो से सरकार तथा जनता का ध्यान यूरिया खाद का प्रयोग कम करने में और जैविक खाद का प्रयोग बढ़ाने में हुआ है। ईश्वर की कृपा बनी रहे तो भविष्य में इस भावना को बल मिलेगा। इसके अलावा गाय के गोबर व मूत्र से कई प्रकार के सामान बनते हैं। जिनसे साबुन, सैम्पो, अगरबत्ती व फिनाईल आदि मुख्य हैं। गाय के गोबर व मूत्र से कई किस्म की दवाईयां बनती हैं, यहां तक कि कैंसर की दवाई भी बनती है। इनसे बनी दवाईयां काफी उपयोगी सिद्ध हुई है। गाय का मूत्र नित्य सेवन करने से मनुष्य काफी बीमारियों से बच सकता है। यदि हम गो-रक्षा करनाा चाहते है तो हमें गाय द्वारा उत्पादित खाद सामान तथा दवाईयों का प्रयोग अधिक करना होगा जिससे गाय की उपयोगिता बढ़ेगी। यदि हम एक बूढ़ी गाय या बैल के गोबर और मूत्र का प्रयोग भली भांति करें तो हम बूढ़ी गाय या बैल से नित्य पच्चास रूपये कमा सकते हैं और उनके ऊपर नित्य का खर्च अधिक से अधिक तीस रूपये, होगा, इस प्रकार एक बूढ़ी गाय या बैल से हम कम से कम बीस रूपये नित्य कमा सकते हैं यदि ऐसी व्यवस्था सरकार या संस्थाओं द्वारा हो जाये तो कोई भी किसान उनको कटने के लिए कसाईयों को नहीं बेचेगा, तभी गो-वंश की रक्षा होनी सम्भव है कारण दूध देने वाली गाय और हल चलाने वाले बैल को तो कोई बेचता ही नहीं ।

सबसे बड़ी खूबी गाय में यह है कि गाय की चमड़ी में एक ऐसा आकर्षण है कि वह सूर्य की किरणों से एक प्रकार की ऊर्जा खेंचती है और वह ऊर्जा उसके दूध में आने से पीने वालों का बड़ा लाभ होता है। यही कारण है कि गाय के घी में जो एक पीलापन दीखाई देता है, वह सूर्य की किरणों का ही अंश है। गाय के दूध में भी कुछ पीलापन होता है, उसका कारण भी यही है। इस प्रकार गाय अनेक किस्मों से मनुष्य के लिए लाभकारी है, जिसका पूरा विवरण करना भी असम्भव है। ऐसे उपयोगी और लाभकारी पशु को हम काटकर खाते हैं या काटने के लिए बेच देते हैं यह मानवता के ऊपर एक बड़ा कलंक है। हमें ऐसे कुकृत्यों से सदा बचना चाहिए। तभी हम मानव कहलाने के अधिकारी बनेंगे।

२- गंगा :- गंगा नदी सब नदियों से अधिक पवित्र व श्रेष्ठ है, इसमें कोई सन्देह नहीं। इसके पीछे एक बहुत बड़ा रहस्य है, वह यह है कि इसके पानी में कभी भी कीड़े नही पड़ते जबकि अन्य नदियों के पानी में कीड़े बहुत जल्दी ही पड़ जाते हैं। इसके पीछे कारण यह है कि गंगा नदी हिमालय पर्वक के गो-मुख से निकलकर हिमालय के अन्दर ही अन्दर कई किस्म की जड़ी-बूटियों से स्पर्श करती हुई आती है, इसलिए जड़ी-बूटियों के प्रभाव से गंगा का पानी इतना पवित्र व रोग विनाशक हो जाता है, जिसमें कीड़ा नही पड़ता। पर गंगा में नहाते से सब पाप धुल जाते हैं, यह एक अन्धविश्वास है। गंगा में नहाने से शरीर युद्ध होता है, पर आत्माशुद्ध नहीं होती। आत्मा की शुद्धि तो शुभ कर्म करने, आचरण पवित्र रखने तथा ईश्वर की उपासना करने से ही होगी इसलिए हमें गंगा नदी के प्रति किसी प्रकार का अन्धविश्वास नहीं पालना चाहिए। कई अन्धभक्त गंगा के पास खड़े होकर हाथ जोड़ते हैं, पैसे फेंकते हैं, यह सब निरर्थक है, केवल एक अन्धविश्वास है और कुछ नहीं।

३. गायत्री :- वैसे तो वेदों के सभी मन्त्र सार्थक एवं उपयोगी है परन्तु गायत्री मन्त्र अन्य मंत्रों से अधिक लाभदायक हैं इसीलिए इसको गुरूमंत्र व महामंत्र भी कहा गया है अन्य मंत्रों में तो हम किसी में धन-वैभव के स्वामी होने की याचना की है, किसी में अपने दुःखों, दुर्गुणों, दुर्व्यसनों को दूर करके अच्छे गुण, कर्म, स्वभाव की प्राप्ति के लिए याचना की है, किसी में परिवार को सुखी बनाने की याचना की है, परन्तु गायत्री मंत्र से सुबुद्धि प्राप्ति की याचना की है जो सर्वोत्तम याचना है। सुबुद्धि आ जाने से बाकी सभी चीजें स्वयं ही आ जाती हैं इसलिए गायत्री मंत्र का अन्य मंत्रों से अपना अलग ही महत्व है, इसलिए गायत्री मंत्र को वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में अपना एक अलग ही स्थान प्राप्त है।

-खुशहाल चन्द्र आर्य

बदलते परिवेश में आर्यो की भूमिका

-अजय आर्य

दुनिया में लोग आते है और सामान्य जीवन जीते हैं मसलन फलते फूलते हैं और चले जाते हैं। यह पुरानी प्रक्रिया है। चल रहा है सृष्टि क्रम इसी ढर्रे पर। कहा है किसी ने कि ''पैदा होना फिर मर जाना, दुनिया का ढंग है पुराना।'' कितने ही लोग अपने जीवन काल में गुमनाम रह जाते हैं कितनों ही को समय अपने साये में ढक लेता है और बिरले ही कुछ समय तक यादगार बनने के बाद खो जाते हैं। अनेकों विचार धाराये पनपती है। इन विचार धाराओं से जुड़े हुए भाषा वैज्ञानिक अपनी अपनी शैली में परम्परा से चले आ रहे क्रिया कलापों और व्यवस्थाओं के लिए नई-नई परिभाषायें और शब्द गढ़ते हैं। कुछ विचार धारायें ऐसी होती है जो जन्म लेते ही मर जाती है। कुछ थोड़े समय फल फूल कर इतिहास में अपना नाम दर्ज करा जाती है, लेकिन कुछ विचारधारायें ऐसी भी होती है जो किसी राष्ट्र की अथवा समुदाय की सीमाओं में कैद न होकर सम्पूर्ण मानवमात्र व विश्व समुदाय की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है और एक सांस्कृतिक विरासत बन कर अमर हो जाती है। विश्व को तमाम तथाकथित सांस्कृतियों में वैदिक संस्कृति ही इस कसौटी पर खरी उतरती है। सौभाग्यशाली है वे लोग जो इस वैदिक संस्कृति में फल फूल रहे हैं।

कभी कभी इस आर्य संस्कृति पर काले साये भी पड़े हैं और इसके अस्तित्व को ही खतरा हुआ है। लेकिन तुरंत ही किसी न किसी महापुरूष ने इसके लिए अस्तित्व की लड़ाई लड़ी है और इसके गौरव को सुरक्षित रखा है। ब्रह्मा से जैमिनी और दयानन्द पर्यन्त अपनायी गई और पोषित की गई वैदिक संस्कृति ने न जाने कितने उतार चढ़ाव देखे हैं किंतु हर बार संकट के भंवर से बाहर आकर फिर से श्रेष्ठता के क्षितिज पर स्थापित हुई हैं।

आज एक यक्ष प्रश्न है जो मेरे आपके और हर उस व्यक्ति के जेहन में काँप रहा है जिसके अदर आर्यत्व के प्रति लगाव है भारतीयता के प्रति प्रेम हैं, पूर्वजों की विरासत के विनाश की पीड़ा है और जिसने पूर्वजों के पुरूषार्थ, मान्यताओं व परम्पराओं को सम्मान की दृष्टि से देखा है- कि क्या हम इस गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत के सच्चे वारिस साबित हुए हैं?क्या हम अपनी संस्कृति के उन गौरवपूर्ण आदर्शो, मर्यादाओं और मान्यताओं की रक्षा कर पाने में सफल हो पाये हैं जिनकी बदौलत वैदिक संस्कृति को विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति का दर्जा प्राप्त हुआ था?क्या आज भी हम उतने ही कर्तव्यनिष्ठ, साहसी, त्यागी, उदार तपस्वी, धार्मिक, सहनशील, परोपकारी, देश भक्त, वेद भक्त, ईमानदार और नैतिक व मर्यादित है जितनी कि यह संस्कृति अपेक्षा रखती हैं।

यही वह प्रश्न है जिसके उत्तर से स्वयं हमारी व हमारे देश के भविष्य की दिशा निर्धारित होने वाली है। यदि ईमानदारी से हम इस प्रश्न का उत्तर खोजें तो उसका सार यही होगा कि - नहीं है हम पूर्वजों से विरासत में मिली वैदिक संस्कृति के सच्चे वारिश। महर्षि दयानन्द ने कोशिश की थी वैदिक संस्कृति को सच्चे वारिस प्राप्त कराने की। उन्होंने आर्य समाज को वैदिक धर्म के प्रहरी के रूप में स्थापित किया था। एक सपना संजोया था उस युग पुरूष ने कि लम्बी सांस्कृतिक व राजनैतिक गुलामी से तहस नहस हुई वैदिक संस्कृति की पुनर्स्थापना के लिए जब आर्य समाज के सिपाही हाथों में ओ३म् का ध्वज लेकर वैदिक धर्म का उद्घोष करते हुए चारों दिशाओं में निकलेंगे तो वैदिक धर्मियों की सोई हुई तरूणाई अंगडाई लेकर उठ खड़ी होगी और फिर आयेगा वह सौभाग्यशाली दिन जब ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' का नारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करके सार्थक हो जायेगा। पर आज स्थिति एकदम उलट चुकी है। आर्य समाज के वे सिपाही जिनकी भुजाओं के बल पर दयानन्द ने वैदिक धर्म को स्थापित करने की कल्पना की थी, भेदभाव रहित समतामूलक समाज और आर्य समाज के सार्वभौमिक होने का सपना संजोया था वे सिपाही आज कहीं खो गये से लगते हैं तथा आज हममें अपने जीवन की आहुति देने की शक्ति नहीं है, सिर्फ ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीने की तमन्ना है। ऐसे कैसे सिद्ध कर पायेगा आर्य समाज अपने को वैदिक संस्कृति का सबसे कर्मठ तथा सशक्त प्रहरी?उस समय अकेला दयानन्द एक मशाल जलाकर चला था और दुनिया उसके पीछे पीछे हो गई थी। आज लाखों मशालें एक साथ जल सकती है पर जलाये कौन?उस मशाल को थामने वाले हाथ कहां से आये?यदि हममें अगर अलग अलग दयानन्द बनने की शक्ति नहीं तो कम से कम सब मिलकर तो एक दयानन्द की क्षतिपूर्ति कर ही सकते हैं।

आज आर्यो के सामने अपने अस्तित्व की रक्षा दयानन्द के सपनों का भारत, जाति पाति, छुआछूत व पाखण्ड रहित एवं धार्मिक समाज की स्थापना करने की चुनौती है। भगत सिंह के सपनों का शोषण मुक्त समाज की स्थापना और अपनी संस्कृति के उत्थान व आदर्शो की रक्षा की चुनौती है। हर आर्य के लिए विचार मंथन का समय है। हमें अपने आप को इस यज्ञ की हवि बनने के लिए तैयार करने का समय है। आज समय है अपने गौरवशाली इतिहास के अनुकरण और इसके लिए हमें अपने पुत्र पुत्रियों को दयानन्द बनने के लिए सत्य की खोज में बाहर निकालना होगा। बिस्मिल, आजाद, भगतसिंह बनाने के लिए उसके अंदर फाँसी पर झूलने व कनपटी पर गोली खाने की ताकत भरनी होगी। बेटियों को अत्याचार से लोहा लेने के लिए रानी लक्ष्मीबाई बनकर रणक्षेत्र में उतरना होगा। एक आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता है क्योंकि एक शिवा पैदा करने के लिए जीजाबाई जैसी माँ, भरत बनाने के लिए राम जैसा भाई, दयानन्द बनाने के लिए विरजानन्द जैसा गुरू और इन सबको बनाने के लिए एक निर्मल सांस्कृतिक परिवेश की आवश्यकता होगी। आज आवश्यकता है कि हर आर्य के हृदय में क्रांति की ज्वाला प्रज्वलित हो।

हमारे सामने हमेशा दो जीवन शैली रही है एक तरफ राम का मर्यादित, भरत का त्यागपूर्ण और लक्ष्मण का सेवारत जीवन है तो कैकेयी का स्वार्थी, मंथरा का कुटिल व रावण का अत्याचारी जीवन भी हमारे सामने है। एक ओर कृष्ण व युधिष्ठिर का नैतिक जीवन है तो दूसरी ओर दुर्योधन और दुश्शासन का उन्मत्त सत्तालोलुप और अहंकारी जीवन भी है। निर्णय हमें करना है कि हम रावण, दुर्योधन, दुष्शासन आदि की जीवन शैली अपनाकर इतिहास के कुछ पन्नों को कलंकित करना चाहते हैं या फिर राम कृष्ण और दयानन्द की जीवन शैलियां अपनाकर वैदिक संस्कृति के सच्चे वारिस बनाना चाहते हैं। आज आवश्यकता है राणा प्रताप व शिवा की आन व दयानन्द की शान की सौगन्ध लेने की कि वैदिक धर्म, संस्कृति, राष्ट्र व आर्य जाति पर मंडराते काले सायों को विच्छिन्न करके रहेंगे ताकि सब एक स्वर में आर्यत्व पर मंडराते खतरों को चुनोती दे सकें-

''राज सत्ता में मदहोश दीवानों लुटेरों,
मैं तुम्हारे जुल्म को आघात को ललकारता हूँ।
मैं तुम्हारे दम्भ को पाखण्ड को देता हूँ चुनौती,
मैं तुम्हारी जात को औकात को ललकारता हूँ।।''

●●●

उत्तराखण्ड महोत्सव 2016

उत्तराखण्ड महापरिषद लखनऊ द्वारा आयोजित उत्तराखण्ड महोत्सव २०१६ के ६वें दिन नेपाल सरकार के कैबिनेट मन्त्री श्री एकनाथ ढकाल जी मुख्य अतिथि को उत्तराखण्ड महापरिषद के सचिव-श्री भुवन चन्द पाठक ने स्वामी दयानन्द का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश (नेपाली भाषा में) भेंट किया।

अदभुत गुरु विरजानन्द सरस्वती जी व अदभुत शिष्य दयानन्द जी

(ऋत ज्ञान प्रकाश से गुरु व शिष्य ने संसार में वैचारिक चमत्कार कर दिया)

पं० उम्मेद सिंह विशारद

जन साधारण का विचार है कि परमात्मा स्वयं अवतार धारण करके पृथ्वी पर जन्म लेते है यह महाअज्ञान है, क्योंकि ईश्वर अजन्मा अव्यय, निरांकार व सृष्टिकृता है वह साकार कैसे हो सकता है। यह अलग बात है कि मोक्ष से लौट कर मुक्त आत्मा संसार में अधर्म का नाश करने के लिय जन्म लेती है। जीवों का जन्म दो प्रकार से होता है एक कर्म बद्ध जीव दूसरा कर्मो के बन्धन से मुक्त जीव।

जैसे महाभारत के इतिहास में अर्जुन कर्म वद्धजीव है और श्री कृष्ण कर्म से मुक्त जीव है। आज हम एसे ही दो महापुरुषों का चिन्तन कर रहे है जो दोनों अर्थात गुरु विरजानन्द सरस्वती जी व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी संसार के विशेषणा, लोकेषणा, व पुत्रेषणा से मुक्त जीव थे। वह ऋत सत्य ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर संसार का कल्याण करते महाप्रयाण कर गये।

अद्भुत ऋत ज्ञान के पोषक गुरु विरजानन्द सरस्वती जी

संसार में वैचारिक क्रान्ती द्वारा परिवर्तन करने वाले महापुरुषों के जीवन में विशेष परिस्थियों में भी वह अपने विपरीत चुनौतियों के चलेंजों से जूझते हुए प्राणों की बाजी लगा देते है। किन्तु वे संघर्ष में पीठ नही दिखाते है अपितु जमाने को बदल देते है। जमाने क गर्दन पकड़ कर अपने पीछे चला देते है।

इतिहास गवाह है महाभारत काल के बाद सर्वप्रथम भारत की पवित्र भूमि में प्राचीन आर्षऋषियों की वेदानुकूल परम्परा द्वारा ऋत सत्य के मार्ग पर चलने वाले गुरु विरजानन्द जी का जन्म संवत १८५४ में ब्रह्ममण परिवार में ग्राम गंगापुर पंजाब में हुआ था इनके पिता नारायण दत्त सारस्वत ब्रह्ममण थे। पांच वर्ष की आयु में नेत्र रोग के कारण इनके नेत्रों की ज्योति चली गयी थी। ११ वर्ष की आयु में माता-पिता दिवंगत हो गये थे और इनकी विलक्षण प्रतिभा होने के कारण सरस्वतादि संस्कृत का गम्भीर ज्ञान इनको हो गया था। इन के सिर से मातृत्व व प्रितृत्व का साया उठने के कारण इनको अपने ज्येष्ट भ्राता व भाभी के शरण में जाना पड़ा। किन्तु भाई व भाभी का क्रूर व शोषण के स्वभाव के कारण उनका संसार से चित्त उपराम हो गया और इन्होंने घर छोड़ दिया।

उत्तराखंड के तीर्थ ऋषिकेश के वनों में तप करने लगे तथा १८ वर्ष की अवस्था में स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी ने सन्यास ग्रहण किया तभी से इनका नाम स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से सन्यास ग्रहण किया, तभी से इनका नाम स्वामी विरजानन्द सरस्वती पड़ गया। सन्यास लेने के पश्चात भारत का भ्रमण करते हुए मथुरा को इन्होंने अपना शिक्षालय का केन्द्र बना लिया था।

इसको हम चमत्कार ही कहेंगे कि इनकी आर्ष ग्रन्थों में अटूट श्रद्धा होती चली गयी और इनको पुराण आदि मानुषी ग्रन्थों से बड़ी घृणा थी। इसी कारण वह कोमुदी और पुराण आदि अर्नाष ग्रन्थों के रचियेता को बड़ी तुच्छ दृष्टि से देखते थे, और अपने शिष्यों को भिक्षा देकर कहते थे इन मनुष्य कृत ग्रन्थों ने मानव समाज में अन्धविश्वास व भ्रम जाल फैला दिया है और ईश्वरीय ज्ञान से वेदों से ऋषियों के ऋत ज्ञान के अभाव से संसार को पीछे ढ़केल दिया है।

वह वेदों को स्वतः प्रमाण मानते थे, और अपने शिष्यों को ऋषि कृत ग्रन्थ ही पढ़ाते थे। वे व्याकरण के सूर्य कहलाते थे, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, व्याकारण के मुख्य ग्रन्थ मानते थे, तथा कौमुदी मनोरमादि मनुष्यकृत न्याय मुक्तावली भागवतादि पुराण व रघु वशांदि काव्य, वेदान्त के पचदशी इत्यादि नवीन सम्प्रदाय-जितने ग्रन्थ थे उनको अशुद्ध व अनार्ष मानते थे।

अदभुत स्वामी दयानन्द सरस्वती गुरु विरजानन्द जी के चरणों में –

अब हम दूसरे महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी जिन्होंने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा संक्षिप्त प्रकाश डालते है यद्वपि आर्य जगत महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र से अवगत है यहां पर हम उनके वैचारिक क्रान्ती पर विचार करते हैं।

अठठारवी व उन्नीस्वी शताब्दि में भारत में अनेक विभूतियों ने जन्म लिया उनमें ऋषि दयानन्द ने सबको पीछे छोड़ दिया क्योंकि अनेक समकालीन विभूतियों ने एक एक विधा पर कार्य किया, किन्तु देव दयानन्द जी ने समाज की तमाम, धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक बुराइयों को जड़ से उखाड़ने का कार्य किया। दयानन्द समय का दास बनकर नहीं आये थे, किन्तु समय को अपना दास बनाने आये थे। साधारण लोग ललकार सुन कर जीवन संग्राम से भाग खड़े होते है और जमाने का रंग पकड़ लेते हैं।

ऋषि दयानन्द जब इस डूबते भारत देश के रणांगन में उतरे तब उन्हें चारों और ललकार ही ललकार सुनाई दी। सबसे बड़ा चेलेंज था विदेशी राज्य की। उन्होंने कहा मैं विदेशी राज्य को वरदास नहीं करुंगा। देश की परतन्त्रता ही ऋषि दयानन्द के सम्मुख सबसे बड़ा चेलेंज था। वह समाज की हर समस्या से अगम हर क्षेत्र में छाती तान खड़े रहे तथा अड़े रहे।

तीन वर्ष का चमत्कार

१४ नवम्बर १८६० के दिन स्वामी दयानन्द जी ने गुरुविरजानन्द का द्वार खटकाया, अन्दर से आवाज आई कौन, इन्होंने उत्तर दिया यही तो पूछने आया हूँ, मैं कौन हूँ। अन्दर से आवाज आई अन्दर आ जाओ और जो अनार्ष ग्रन्थ बगल में दबाये हो उन्हें यमुना में फेंक आओ। अद्भुत गुरु अदभुत शिष्य/ स्वामी जी ने गुरु विरजानन्द जी से केवल ३ वर्ष व्याकरण पढ़ा था, और पिछला सब कुछ भुला दिया था। रण क्षेत्र में उत्तर कर उन्होंने जो भी कार्य किये, वह सब इन वर्षो का चमत्कार था। तीन वर्षो में जो पाया वह बहुत ही मूल्य वान था। उन्होंने अपने गुरु से जो भेद पाया था, वह था आर्ष और अनार्ष का भेद करना इसी आर्ष क्रान्ती का मूल सोत्र सत्यार्थ प्रकाश वैचारिक आर्ष क्रान्ती का ग्रन्थ लिखा, और उसमें ३७७ ग्रन्थों का उदाहरण, १५४२ वेद मंत्रों का उधारण लिखा। ऐसे विचार उस युग में कोई सोच भी नहीं सकता था। और १८७४ में स्वराज्य सर्वोत्तम है इसे लिखने का साहस केवल महर्षि दयानन्द जी ही कर सके थे। उन्होंने पुनः हमें वेदों की ओर लोटाया। तीन वर्षो के अध्ययन ने संसार के रुढ़ी विचार धाराओं को परिवर्तन कर दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा मुख्य कार्य–

सबसे प्रथम कार्य उन्होंने जो किया कि में विदेशी राज्य को वरदाश्त नही करुंगा, और तीन वर्ष उनके अज्ञात जीवन में उन्होंने जगह-जगह घूम कर स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए प्रचार होगा। यही कारण है कि उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाई थी, और अस्सी प्रतिशत आर्यो ने स्वतन्त्रता संग्राम में अपना बलिदान दिया था।

रुढ़िवाद पर प्रहार

महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सदियों से परम्परागत रुढ़ीवाद पर कठोर प्रहार किया। उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में रुढ़िवाद को तिलांजलि देने का नारा लगाया। ऋषि दयानन्द के समय में भारत के हर क्षेत्र में हलचल मच गयी।

धार्मिक क्षेत्र में रुढ़िवाद पर प्रहार

महर्षि ने सबसे पहला प्रहार वेदों के रुढ़ी अर्थो पर किया और निरुक्त शास्त्र के आधार पर उन्होंने सिद्ध किया कि वेदों में इतिहास नहीं है, अर्थात प्रत्येक मंत्रो के योगिक ईश्वर परक अर्थ है। उन्होंने सायणाचार्य, मेवसमूलर महीधर जेकोबी विद्वानों के अर्थो को उलट दिया। इसी एक कार्य ने मूर्तिपूजा, व अन्य धार्मिक आडम्बरों को बदल दिया।

सामाजिक क्षेत्रा में रुढ़िवाद पर प्रहार

महर्षि समझते थे कि एक तो भारतवासी विदेशियों के गुलाम है दूसरे सामाजिक अन्धविश्वासों से अपना अहित कर रहे है। उन्होंने तमाम सामाजिक बुराइयों का बहिष्कार किया। महर्षि ने समाजसुधार को रूप रेखा बना दी। उसी को लेकर २०वीं शताब्दि में सामाजिक व राजनैतिक नेताओं ने कार्य किया।

राजनैतिक क्षेत्रा में रुढ़िवाद पर प्रहार

महर्षि दयानन्द धार्मिक व सामाजिक नेता होते हुए भी इस विचार पर प्रहार किया। सत्यार्थ प्रकाश के ८वे सम्मुलास में लिखा - अभाग्योदय से और आर्यो के आलस्य प्रमाद, परस्पर विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यव्रत में भी आर्यो का अखण्ड, स्वतन्त्र स्वाधीन निमर्य राज्य इस समय नही है कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। उक्त विचार गुरु विरजानन्द जी व महर्षि दयानन्द जी की बहुत बड़ी क्रान्ति थी।

महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज वैचारिक क्रान्ति का सूर्य है।

आर्य समाज संगठन ने अपने जन्म काल से संसार में प्रत्येक क्षेत्र में सुधार वादी वैचारिक क्रान्ति की कमी न बुझने वाली ज्योति जगा रखी है। भारत के इतिहास में अब तक किसी भी अन्य संगठन ने इतना बड़ा कार्य नही किया और न ही कर सकेगा। आज भी प्राचीन भारत की संस्कृति संस्कार यदि जिन्दा है तो आर्य समाज के कारण है आर्य समाज से जुड़े सन्यासी वानप्रस्थी उपदेशक कार्यकृर्ता व सदस्यगण बहुत बहुत धन्यवाद के पात्र है। सम्पूर्ण विश्व में जुड़े आर्य समाज के अनुयायी अपने लिये मोक्ष का मार्ग बना रहे है।

पं. उम्मेद सिंह विशारद
वैदिक प्रचारक

डा. भीमराव अम्बेदकर जी की 125 वीं जयन्ती पर

'आर्य समाज और डा. भीमराव अम्बेदकर'

—मनमोहन कुमार आर्य

डा. भीमरावजी अम्बेडकर आजकल देश व विश्व में एक जाना माना नाम है। आपने भारत के संविधान के निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। इसके साथ ही आप भारत में प्रथम कानून मंत्री के रूप में भी आदृत रहे हैं। डा. अम्बेदकर जी की पृष्ठभूमि एक दलित परिवार से थी। दलित होने के कारण आपको हिन्दू द्विजों की उपेक्षा एवं पक्षपात पूर्ण व्यवहार का शिकार होना पड़ा। महर्षि दयानन्द महाभारत काल के बाद शायद पहले व सबसे अधिक प्रभावशाली सुधारक रहे जिन्होंने वेदादि शास्त्रों के आधार पर जन्मना जातिवाद व अस्पर्शयता आदि को वैदिक विचारधारा व सिद्धान्तों के प्रतिकूल सिद्ध किया था। आपने हिन्दू पौराणिक ब्राह्मण वर्ग द्वारा स्त्री व दलितों से छीने गये वेदों के अध्ययन के अधिकार को न केवल लौटाया अपितु इसके समर्थन में अनेक प्रमाण देने के साथ आपके अनुयायियों द्वारा स्थापित गुरुकुलों व अन्य शिक्षण संस्थाओं में दलित विद्यार्थियों को प्रवेश दिया और उन्हें हिन्दू पौराणिक ब्राह्मणों से भी अधिक संस्कृतज्ञ व वेदों का वेदपाठी विद्वान पण्डित बनाया। उनके व उनके अनुयायियों के प्रयासों से देश में जन्मना जातिवाद की दीवारे कमजोर हुईं व टूटी और इसके साथ दलितों सहित सभी समुदायों के लोगों को शिक्षा व समाज में समानता के अधिकार मिले। ईश्वरीय ज्ञान वेदों के पुनरुद्धार सहित सामाजिक समानता और सभी प्रकार के सामाजिक सुधारों का श्रेय भी महर्षि दयानन्द व उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज को ही है।

14 अप्रैल, सन् 1891 और मध्य प्रदेश का महू स्थान भारत के संविधान निर्माता डा. भीमराव अम्बेडकर जी की जन्मतिथि व जन्मभूमि है। डा. अम्बेडकर जी की 125 वीं जयन्ती पर हम आर्यसमाज के उच्च कोटि के विद्वान डा. कुशलदेव शास्त्री का "आर्यसमाज और डा. अम्बेडकर" शीर्षक लेख प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें डा. अम्बेडकर के आर्यसमाज के अनुयायियों से सम्बन्ध व सहयोग सहित उन पर आर्यसमाज के प्रभाव को रेखांकित किया गया है। विद्वान लखक ने लिखा है कि आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म सन् 1825 में और बलिदान 1883 में हुआ था। आर्यसमाज की स्थापना के 16 वर्ष बाद और स्वामी दयानन्द के देहावसान के लगभग 8 वर्ष बाद 14 अप्रैल, 1891 को भारतरत्न डा. भीमराव अम्बेडकर का महू (मध्यप्रदेश) में जन्म हुआ।

यह तो स्पष्ट ही है कि माननीय डा. अम्बेडकर के काल में स्वामी दयानन्द शरीररूप में विद्यमान नहीं थे, पर आर्यसामाजिक आन्दोलन के रूप में उनका यशःशरीर तो जरूर विद्यमान था। डा. भीमराव अम्बेडकरजी की ग्रन्थ सम्पदा इस बात की साक्षी है कि वे स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज तथा उनके अनुयायियों की गतिविधियों से अच्छी तरह परिचित थे। प्रस्तुत काल में आर्यसमाज का आन्दोलन अपने पूरे यौवन पर था, जिसका प्रभाव डा. अम्बेडकर और उनके युग पर निश्चित रूप से पड़ा है। डा. कुशलदेव शास्त्री ने यह पंक्तियां डा. अम्बेडकर और आर्यसमाज के परस्पर सम्बन्धों को उपलब्ध जानकारी के आधार पर प्रस्तुत किया है।

जैसे स्वामी दयानन्द गुजराती होते हुए भी मूलतः औदीच्य तिवारी ब्राह्मण माने जाते थे, वैसे ही डा. अम्बेडकर भी मध्यप्रदेश में जन्म लेने के बावजूद मूलतः तथाकथित शूद्र (महार) कुलोत्पन्न महाराष्ट्रीय के रूप में सुप्रसिद्ध थे। कालान्तर में यह दोनों विभूतियां राष्ट्रीय ही नहीं, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय महापुरुष के रूप में भी सुप्रसिद्ध हुईं। जिस समय महाराष्ट्र में (तत्कालीन मुम्बई राज्य में) 'रानाडे–फुले युग' का अस्त हो रहा था, उसी समय वहां श्री सयाजीराव गायकवाड़, राजर्षि शाहू महाराज तथा डा. अम्बेडकर के युग का उदय हो रहा था। यह दूसरी पीढ़ी भी अपनी पूर्ववर्ती दयानन्द–रानाडे–फुले आदि महापुरुषों की कार्यप्रणाली से प्रभावित और प्रेरित रही है। श्री सयाजीराव गायकवाड़ और राजर्षि शाहू महाराज स्वामी दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित 'आर्यसमाज' से अधिक प्रभावित थे, तो डा. अम्बेडकर महात्मा फुले और उनके द्वारा स्थापित 'सत्य शोधक समाज' से। श्री सयाजीराव गायकवाड़ और राजर्षि शाहू महाराज आर्यसमाजी होते हुए भी सत्य शोधक समाज के भी सहयोगी और प्रशंसक रहे, तथा डा. अम्बेडकर महात्मा फुले के शिष्य होते हुए भी स्वामी दयानन्द और उनके आर्यसमाजी आन्दोलन के प्रशंसक होने के साथ–साथ समालोचक भी हैं, पर उन्हें आर्यनरेश द्वय श्री गायकवाड़ और राजर्षि शाहू की तरह आर्यसमाज आन्दोलन के सहयोगियों में नहीं खड़ा किया जा सकता। हां ! आर्यसमाजी आन्दोलन के डा. अम्बेडकर हमेशा से ही हितैषी रहे हैं।

डा. अम्बेडकर के लिए स्वामी दयानन्द की तुलना में महत्मा फुले अधिक आराध्य रहे। डा. अम्बेडकर ने गौतम बुद्ध, सन्त कबीर और महात्मा फुले की महापुरुष त्रयी को अपना गुरु माना है। संस्कृत व राष्ट्रभाषा हिन्दी की तरह प्रान्तीय स्तर पर मराठी में काम–काज न कर पाने के कारण महाराष्ट्र में आर्यसमाज का आन्दोलन उतना प्रभावी ढंग से न चल सका जितना कि उत्तर भारत में। राजर्षि शाहू महाराज के अनुसार 'ब्राह्मण नौकरशाही' के कारण महाराष्ट्र में आर्यसमाज का आन्दोलन प्रभावी नहीं हो सका।

डा. अम्बेडकर जी की शिक्षा में बड़ौदा नरेश जी का सहयोग रहा है। इण्टर पास करने के बाद डा. भीमराव अम्बेदकर को बी.ए., एम.ए., पी.एच.डी., डी.एस. सी. (लन्दन), एल.एल.डी., बार–एट–ला, जैसी उपाधियों से विभूषित और प्रकाण्ड पण्डित बनाने में आर्यसमाजी आन्दोलन का, प्रत्यक्ष नहीं तो अप्रत्यक्ष रूप में, अविस्मरणीय योगदान रहा है। इस बात को और कोई जाने या न जाने स्वयं डा. अम्बेडकर जरूर जानते थे। इसलिए भी उनके ग्रन्थों में आर्यसमाजी आन्दोलन के प्रति विशेष सहानुभूति नजर आती है। जहां आर्य नरेश श्री सयाजीराव गायकवाड़ ने एन् 1912 से 1915 तक डा. भीमराव अम्बेडकर को उच्च विद्या–विभूषित करने के लिए शिष्यवृत्तियां प्रदान कीं और उन्हें अमेरिका भेजा, वहां अपने–आपको हृदय से आर्यसमाजी कहलानेवाले राजर्षि शाहू महाराज ने भी सन् 1919 से 1922 तक अम्बेडकरजी को विदेश जाकर अध्ययन करने के लिए आर्थिक दृष्टि से सम्पूर्ण सहयोग दिया था।

आर्यनरेश राजर्षि शाहू महाराज ने पत्रकार डा. अम्बेडकर के प्रथम पत्र 'मूकनायक' के संचालन में भी आर्थिक महायता प्रदान की थी और इतना ही नहीं सन् 1920 में माणगांव में सम्पन्न प्रथम अस्पृश्यता परिषद में कोल्हापुर के आर्य नरेश शाहू महाराज ने यह भविष्यवाणी भी की थी कि 'डा. अम्बेडकर भारतवर्ष के अखिल भारतीय नेता होंगे।' तत्कालीन मुम्बई राज्य के इन दोनों राजाओं के पास जो यह उदारमन और उदारदृष्टि थी, उसकी पृष्ठभूमि में स्वामी दयानन्द खड़े हुए नजर आते हैं। इन दोनों ही आर्यनरेशों के अन्तःकरण पर निर्विवाद रूप से

आर्यसमाजी आन्दोलन की विशिष्ट छाप रही है।

स्वामी श्रद्धानन्द (1856–1926) महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी व उनकी शिक्षा पद्धति को मूर्तरूप देने वाले महापुरुष थे। दलितोद्धार एवं जातिपांति उन्मूलन में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। डा. अम्बेडकर जी स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों से पूर्णतः परिचित थे। अपनी 'व्हाट कांग्रेस एण्ड गांधी हैव डन टू दि अन्टचेबल्स' पुस्तक में आपने लिखा है कि 'स्वामी श्रद्धानन्द दलितों के सर्वश्रेष्ठ सहायक और समर्थक थे। अस्पृश्यता निवारण से सम्बन्धित (कांग्रेस की) समिति में रहकर यदि उन्हें स्थिरता से काम करने का अवसर मिल पाता तो निःसन्देह एक बहुत बड़ी योजना आज हमारे सामने विद्यमान होती।' महर्षि दयानन्द के विख्यात अनुयायी लाला लाजपतराय से आपके गहरे आत्मीय सम्बन्ध थे। यही कारण था की अंग्रेजों के बरबरतापूर्ण लाठीप्रहार से लाला जी की मृत्यु होने पर उन्होंने उन्हें अश्रुपूर्ण शब्दों में श्रद्धांजलि दी थी। डा. भीमराव जी अम्बेदकर जनवरी, 1913 में बड़ौदा आये थे और यहां उनका दलितोद्धार का कार्यकरने वाले आर्यसमाज के विद्वान पं. आत्माराम अमृतसरी जी से परिचय हुआ। अमृतसरी जी उन्हें उपयुक्त निवास की व्यवस्था होने तक अपने साथ आर्यसमाज वडोदरा में ले आये थे जहां वह एक सप्ताह तक उनके साथ रहे थे। स्वाभाविक है कि पं. आत्माराम अमृसरी और आर्यसमाज के इस सहवास व निकटता से डा. अम्बेडकर जी को आर्यसमाज की विचारधारा को जानने व समझने का अवसर मिला होगा और उन्होंने आर्यसमाज के दैनिक सन्ध्या व अग्निहोत्र सहित अन्य गतिविधियों को भी देखा व समझा होगा और इनको करने के कारणों व होने वाले लाभों को भी जाना होगा।

डा. भीमराव अम्बेडकर जी की जयन्ती पर हमने उनके आर्यसमाज से जुड़े कुछ ही प्रसंगों को प्रस्तुत किया है। आज ही हमने जीटीवी पर एक परिचर्चा में यह तथ्य सुना कि डा. अम्बेडकर ने भारत की राष्ट्रभाषा क्या हो, इस पर अपना मत देते हुए संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव किया था। उनके अनेक विचार सामने आ रहे हैं। हमें यह प्रतीत होता है कि उनके वचनों वा सूक्तियों का एक संग्रह प्रकाशित होना चाहिये जिससे उनके व्यापक दृष्टिकोण को कम समय में जाना व समझा जा सके। टीवी परिचर्चा में हमने यह तथ्य भी सुना कि डा. अम्बेदकर जम्मू कश्मीर के तीन हिस्से करना चाहते थे जिनमें एक एक मुस्लिम कश्मीर और दो तिहाई भाग में दलित व हिन्दू कश्मीर। एक अन्य तथ्य भी बताया गया कि डा. अम्बेदकर अपने ज्ञान व अनुभव के कारण हिन्दू व मुस्लिमों की पूरी पूरी आबादी की भारत व पाकिस्तान में अदला बदली के समर्थक थे। परिचर्चा से यह तथ्य भी सामने आया कि पाकिस्तान बनने पर वहां के मुस्लिमों ने दलित हिन्दुओं को वहां बलपूर्वक रोक लिया था जिससे वह उनका मल–मूत्र आदि साफ कर सकें। अतः हम यह अनुभव करते हैं कि विगत 69 वर्षों की आजादी के काल में उनका वास्तविक स्वरूप व सम्पूर्ण विचार देशवासियों के सामने नहीं आ पायें हैं व राजनीतिक कारणों से उन्हें रोका गया है। हम आशा करते हैं कि वर्तमान समय में डा. अम्बेडकर जी के देशहितकारी विचारों को देशवासियों के सामने प्रस्तुत करने में सफल होगा जिससे उनका सही मूल्यांकन हो सकता है। वैसे भी देश की युवा पीढ़ी में डा. अम्बेडकर के बारे में जानकारी बहुत कम व न के बराबर है जिसे उनके प्रति न्याय नहीं कहा जा सकता। आज डा. अम्बेडकर जी को उनकी जयन्ती पर हम अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनको सच्ची श्रद्धांजलि यही हो सकती है कि हिन्दू समाज से जन्मना जातिवाद और सामाजिक असमानता सदा–सदा के लिए समाप्त हो जाये। क्या हमारे हिन्दू मुख्यतः जन्मना ब्राह्मण भाई व धार्मिक नेता समय व युग के लिए अति आवश्यक इस मानवोचित विचार को कियात्मक रूप देने में सहयोग करने को तैयार हैं?हम यह भी अनुभव करते हैं कि हिन्दू समाज को यह नियम प्रचारित करना चाहिये कि किसी भी मनुष्य के साथ धार्मिक व सामाजिक दृष्टि से पक्षपात, भेदभाव, अस्पर्शयता का व्यवहार नहीं करना चाहिये अपितु अपने व परायों सभी के प्रति स्वात्मवत, प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार व यथायोग्य (उसके गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार) व्यवहार करना चाहिये।

पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121

साभार परोपकारी-

समर्पण

एक नन्हीं सी बच्ची अपने पिता के साथ जा रही थी। रास्ते में पानी आया देखकर, पिता ने बच्ची से कहा कि तुम मेरा हाथ पकड़ लो। बच्ची ने कहा कि नहीं पिता जी, आप मेरा हाथ पकड़ लो। पिता ने कहा कि इस में क्या अंतर पड़ता है ?तो बच्ची बोली कि अंतर पड़ता है। मैं असावधानी के कारण आप का हाथ छोड़ सकती हूँ, परन्तु आप मेरा हाथ नहीं छोड़ेंगे। पिता ने बच्ची का हाथ पकड़ लिया और बच्ची निश्चिंत होकर चलने लगी। उसे दृढ़ विश्वास था कि उस का पिता उसे गिरने व फिसलने नहीं देगा। वह उसे हर हालत में संभाले व थामे रखेगा।

आध्यात्मिक जगत् में भी हम सब बच्चों के एक ही पिता परम-पिता-परमात्मा हैं। ये पिता सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी व दयालु हैं। हम बच्चों में से कई बच्चे तो इस चेतन पिता की सत्ता को स्वीकार नहीं करते हैं अर्थात् नास्तिक हैं। वे सदा न+अस्ति की रट लगाए रहते हैं। उनका मानना है कि ईश्वर नाम की वस्तु है ही नहीं। जो मानते हैं कि ईश्वर भी चेतन सत्ता है, वे स्वयं को आस्तिक मानते हैं। ईश्वर पर विश्वास भी करते हैं और अपने-अपने ढंग से ईश्वर की पूजा, भक्ति व आराधना भी करते हैं। ईश्वर की अलग-अलग प्रतिमाएँ स्थापित करते हैं। अपने-अपने कई इष्टदेव मानकर अपने ही ढंग से उनकी उपासना करते हैं। विडम्बना तो यह है कि स्वयं को श्रद्धालु व ईश्वर-भक्त समझते हैं, परन्तु हर समय भयभीत व आशंकित रहते हैं। भजन तो बोलते हैं ''अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में, किन्तु शब्दों के अर्थ व भाव नहीं जानते, जानते भी हैं तो अनुभव नहीं करते। यदि जानते होते तो भार सौंपने के पश्चात् स्वयं को हलका अनुभव करते। प्रायः देखने में तो यही आता है कि हम इच्छाओं व चिन्ताओं के बोझ से दबे पड़े हैं।

हमारा लौकिक पिता तो अल्पज्ञान वाला, अल्पशक्ति वाला, सीमित साधनों वाला है। यह पिता तो पूरा-पूरा न्याय भी नहीं कर सकता है। इस पिता के साथ हमारा संबन्ध भी अनित्य है। दूसरी ओर हमारा पिता परमात्मा है, जिस के साथ हमारा नित्य का संबन्ध है। यह संबन्ध अनादि काल से है और अनादि काल तक रहेगा। वह कभी भी हमें छोड़ता नहीं है और उसने हम बच्चों को उत्तम-उत्तम पदार्थ बनाकर दान में दे रखे हैं। अपनी सर्वव्यापकता के कारण से वे हम बच्चों को सहज व सुगमता से उपलब्ध हैं। अपनी ही अविद्या के कारण हम उसे दूर समझ रहे होते हैं और कई बार आशंकित भी हो उठते हैं कि वह हमारी प्रार्थना सुन भी रहा है या नहीं?जबकि सर्वज्ञता के गुण से गुणी पिता हमें जान, सुन व देख रहा है।

प्रश्न यह उठता है कि नन्हीं सी बच्ची के समान हम आश्वस्त व भयमुक्त क्यों नहीं हो रहे हैं?जरा सा इस पर चिंतन, मनन करें कि भूल कहां हो रही है और भूल को पकड़कर सुधारने का प्रयास करें। सब से बड़ी भूल है कि हम केवल शब्दों के जाल में अथवा मात्र-कर्मकाण्ड में उलझे रहते हैं। स्वयं को आन्तरिक गहराई में उतारकर परमात्मा को समर्पित नहीं हो पाते। समर्पण करने में चूक जाते हैं, तो भयमुक्त कैसे हो सकते हैं। श्रद्धा और दृढ़-विश्वास की कमी के कारण भी समर्पण नहीं कर पाते। बच्ची ने श्रद्धा और दृढ़-विश्वास के साथ अपना हाथ पिता के हाथों में दे दिया और स्वयं निश्चिंत हो गई कि अब उसका पिता हर परिस्थिति में उस का सच्चा साथी बना रहेगा।

हम बच्चे भी अपने परमपिता परमेश्वर में सच्ची श्रद्धा व दृढ़-विश्वास के साथ समर्पित हो जाएँ। स्वयं को ईश्वर के अर्पण कर दें। ईश्वर के प्रति अगाध श्रद्धा उत्पन्न करें। ईश्वर के स्वरूप को भली-भांति जानकर उसकी अतिप्रेम से भक्ति, उपासना करें। अपनी समस्त क्रियाएँ ईश्वर को परमपिता मानकर उसको अर्पण कर दें। ऋषि पतंजलि जी ने भी समस्त कर्मो के समर्पण के साथ ईश्वर की उपासना को ही ईश्वर-प्रणिधान के अन्तर्गत लिया है। ईश्वर-प्रणिधान अर्थात् समर्पण को ही व्यावहारिक रूप दें, केवल शब्दों में ही न उलझे रहें। नन्हीं सी बच्ची के समान हम परमपिता परमात्मा के ही नन्हें-नन्हें बच्चे हैं। हम भी परमपिता परमात्मा की दृष्टि में सहायता के पात्र बन जाएंगे व सदैव के लिए भयमुक्त रहेंगे।

-राज कुकरेजा,
७८६/८ करनाल

चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा फर्रूखाबाद के प्रधान तथा ऋषि मिशन को समर्पित वेदों के प्रकाण्ड विद्वान पूज्य आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री के नेतृत्व में मेला रामनगरिया पांचाल घाट फर्रूखाबाद में दिनांक २२.१.१६ से २३.२.२०१६ तक निरन्तर एक माह तक चलने वाले चरित्र निर्माण शिविर का भव्य आयोजन गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी धूमधाम से किया गया। जिसमें आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान, सन्यासी एवं भजनोपदेशकों ने निरन्तर वेदज्ञान की धारा प्रवाहित कर वैदिक धर्म, सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार किया। शिविर के अन्तर्गत आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी के सानिध्य में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें अनेकों प्रशिक्षार्थियों ने पौरोहित्य कार्य में दक्षता प्राप्त की। इसके साथ साथ गौ, गंगा गायत्री रक्षार्थ संत सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। जिसमें आये सभी संतों ने एक स्वर से वैदिक सिद्धान्तों पर जोर दिया।

समापन अवसर पर बोलते हुए आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री ने कहा कि इस गंगा के तट पर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सात बार आकर वैदिक धर्म प्रचार की जो प्रारंभिक ज्योति जलाई उसी का अनुसरण करते हुए चरित्र निर्माण शिविर निरन्तर पांच वर्षो से नित नए आयामों को प्राप्त कर रहा है तथा वैदिक सिद्धान्तों का प्रसार कर रहा है। आज इसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ गयी है कि सम्पूर्ण मेले में वैदिक क्षेत्र एक आदर्श क्षेत्र बन गया है।

शिविर के व्यवस्थापक श्री प्रमोद कुमार आर्य तथा संयोजकगण डा. शिवराम सिंह आर्य, डा. हरिदत्त द्विवेदी, मुन्ना यादव आदि ने सभी आगन्तुक विद्वानों का स्वागत सत्कार कर आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान स्वामी धर्ममुनि, आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी, पं. शिवकुमार शास्त्री, आचार्य योगेश शास्त्री, श्यामवीर राघव, प्रदीप शास्त्री, कैलाश कर्मठ, सतीश सत्यम, अर्चना आर्या, शिवनारायण आर्य, विजय पाल आर्य, सहदेव सरस, धनीराम बेधड़क, कप्तान सिंह आर्य, स्वामी महेश योगी, दीपक शास्त्री, हरिओम शास्त्री, हरिदेव शास्त्री, लवकुश शास्त्री, शैलेश शास्त्री, जयदेव योगाचार्य,ब्र.राजकुमार आर्य, अमीचन्द आदि अनेकों विद्वानों ने सम्मिलित होकर प्रचार प्रसार किया।

-संदीप आर्य

स्त्री आर्य समाज रानीमंडी अतरसुइया, इलाहाबाद

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामना

नव वर्ष की पावन बेला में
हे आर्यो प्रेषित है मेरा संदेश
तमसो मां ज्योतिर्गमयी है
वेद का सुन्दरतम् आदेश।।
परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना
आर्यो जन-जन को आप शक्ति प्रदान करे
निहित शक्ति के द्वारा आर्यो
अज्ञान अविद्यई अंधकार दूर करें
मानव में ज्ञान प्रकाश नित बांटे
हे आर्यो तुम्हें यही है निर्देश
तमसो मां ज्योतिर्गमयी है
वेद का सुन्दरतम आदेश।।
आर्यो जागो, कदापि न सोना
प्रकाशी ऊर्जा नित्य बढ़ाओ
अंधकार स्वतः मिट जायेगा
आर्यो जन जन में उद्घोष लगाओ।
जगत में सागर उत्थान हो मानव
मंगलमयी प्रार्थना प्रभु को पेश
तमसो मां ज्योतिर्गमयी है
वेद का सुन्दरतम आदेश।।

होली मिलन समारोह का आयोजन

बिल्सी आर्य समाज गुधनी खौसारा के तत्वावधान में होली मिलन समारोह आयोजित किया गया जिसमें बड़ी संख्या में ग्राम व क्षेत्र के आर्यजन एक दूसरे के गले मिले और आपसी प्रेम, भाईचारे का परिचय दिया। इससे पूर्व प्रसिद्ध समाज सुधारक आचार्य संजीव रूप के निर्देशन में ५२५ घरों में यज्ञ किया गया व महिलाओं बच्चों ने घरों में व पुरूषों ने होलिका दहन कर दो सौ किलोग्राम सामग्री गौ घृत व औषधियां निर्मित कर चढ़ाई। लकड़ी का उपयोग कम किया गया कण्डों का उपयोग अधिक किया गया। स्थानीय जाटव समाज व आर्य नौबत राम जी के नेतृत्व में यह मर्यादा बनाई गयी कि कोई युवक किसी की लकड़ी चोरी करके नहीं लायेगा। अपने घर से जलाने योग्य लकड़ी ही लेकर आयेगा। यदि कोई सरकारी लकड़ी की चोरी करके लायेगा तो उसे दण्डित किया जायेगा। इस तरह काफी लकड़ी बचाई गयी। इस समारोह में आचार्य संजीव रूप ने कहा कि ''मुझे खुशी है कि दस हजार की आबादी वाले गांव गुधनी में किसी ने भी इस बार शराब नहीं पी न कोई झगड़ा आपस में किया। होली तो यज्ञ का प्रेम का समर्पण का वैमनस्य मिटाने का पर्व है। उन्होंने गजल सुनाते हुए कहा कि -

मान जायें रूठे सारे अपने न हो पराये
निन्दक भी स्तुति करें कुछ ऐसा काम कर लें।

हाल और चाल शब्दों का अर्थ करते हुए उन्होंने कहा-

अपनी ही चाल बिगड़ी जो गैर हो गए वो
हो जाएं फिर हमारे वो हाल चाल कर लें।।

आखिरी शेर बेहद उम्दा रहा-

पाएंगे कुल जहां की खुशियां ये रूप तय है
हम भी प्रहलाद जैसा अपना एंमाल कर लें।

इस अवसर पर बिल्सी के अजीत सक्सेना ने भी अपने विचार रखते हुए कहा कि 'जीत प्रहलाद की ही होली है। दूसरे को मिटाने वाले खुद मिट जाते हैं। बाबा इण्टरनेशनल बिल्सी के निर्देशक अनुज वार्ष्णेय ने कहा कि होली की अग्नि में यदि हम अपने अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध को जला पाये तो जानो हमने ही सही मायने में होली मनाई है।

मास्टर अमरपाल सिंह ने कहा कि 'जो बीत गया वो भूत है हम भूत के नहीं भविष्य के साथ जिएं। शुभ संकल्पों के साथ बुराइयों को छोड़ै। समारोह में राजेन्द्र सिहं, योगेश वार्ष्णेय, विशाल सिंह रायपुर, ओम प्रकाश सिंह, प्रज्ञा आर्या, सूरजवती देवी, अनिल उपाध्याय, संजय सिंह, प्रश्रय आर्य, साहब सिंह, ओम प्रकाश सिंह, सत्यम आर्य आदि उपस्थित रहें।

आर्य समाज स्थापना एवं वैदिक नव संवत्सर 2073 पर्व

आर्य समाज श्रृंगार नगर आलमबाग द्वारा दिनांक ८ अप्रैल २०१६ को वैदिक नव संवत्सर २०७३ एवं आर्य समाज स्थापना पर्व के शुभ अवसर पर १०१ कुण्डीय विशाल यज्ञ का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें भारी संख्या में आर्य जनों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

यज्ञ कार्यक्रम प्रातः ७:१५ से ६:१५ तक चला। यज्ञ समाप्ति के पश्चात श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी, आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ के प्रधान श्री अभय पाल सिंह, कोषाध्यक्ष आर्य समाज इंदिरा नगर के वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा स्वामी अमृतानन्द जी द्वारा दी गयी।

इसके अलावा ज्योतिष शास्त्र के गूढ रहस्यों को सरल ढंग से प्रभावपूर्ण शैली में समझाया गया। जिससे लोगों की भ्रांतियों का निवारण हुआ।

साप्ताहिक यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज जय ओम नगर, अमरोहा में दि. २६ मार्च, २०१६ को साप्ताहिक यज्ञ श्री अंकित आर्य के ब्रह्मत्व में व यजमान श्री शक्ति कुमार सपत्नीक रहे। पूर्णाहुति के उपरान्त श्रीमती हेमलता जी ने सत्यार्थ प्रकाश पाठ पढ़कर सुनाया एवं श्रीमती विनीता जी ने यजुर्वेद का पाठ अर्थ सहित पढ़कर सुनाया। तत्पश्चात श्री शक्ति कुमारजी ने गोष्ठी में कहा कि वाणी का महत्व क्या है?वाणी को सुनकर अंधेरे से बाहर निकलने में सहायता मिलती है।

अंत में शांति पाठ हुआ व प्रसाद वितरण हुआ। इस अवसर पर श्री अंकित आर्य, श्री दीपक आर्य,श्री भूपेन्द्र सिंह जी, श्री डा.योगेन्द्र सिंह जी, श्री पूरन सिंह सोनी, श्री चन्द्रपाल सिंह जी, श्री लेखराम सैनी जी, श्री राकेश सैनी, श्री राजू सैनी, श्री शक्ति कुमार जी, श्रीमती हेमलता जी, श्रीमती प्रियंका जी, श्रीमती विनीता जी, श्रीमती मंजू रानी जी, श्री माघव जी श्री राघव जी आदि उपस्थित रहे।

-दीपक आर्य

आर्य समाज मुम्बई का 142वां स्थापना दिवस मनाया गया

आर्य समाज मुम्बई का १४२वां स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। आर्य समाज मुम्बई निरन्तर वेद प्रचार में अग्रसर रहा है गुरूकुलों की सहायता हो या किसी का सम्मान हो या गोसेवा सहायता सभी में मुम्बई आर्य समाज ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया है। वर्तमान में मुम्बई आर्य समाज के प्रधान श्री देशबंधु शर्मा जी, मंत्री विजय गौतम जी, कोषाध्यक्ष श्री किशन लाल महाजन जी, एवं पुरोहित गण श्री श्रवण कुमार शास्त्री, श्री नीरज शास्त्री, श्री चन्द्रपाल शास्त्री, श्री धर्मपाल शास्त्री, श्री कैलाश शास्त्री, श्री योगेश शास्त्री, श्री बालकिशन शास्त्री, श्री वीरपाल शास्त्री, आचार्य महेन्द्र जी आदि पुरोहित गण आर्य समाज मुम्बई को सुशोभित कर रहे हैं। १४२वें स्थापना दिवस पर आर्य मित्र परिवार एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की ओर से हार्दिक शुभकामनायें व्यक्त करता है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि आर्य समाज मुम्बई निरन्तर प्रगति करती रहे।

शुभकामनाओं सहित
श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा वैदिक साहित्य का वितरण

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा उत्तराखण्ड महोत्सव में अपना वैदिक साहित्य के प्रचार प्रसार के लिए वैदिक साहित्य का स्टाल लगाया गया जिसमें मुलायम सिंह जी की पुत्रवधु अपर्णा यादव जी को वैदिक साहित्य भेंट किया गया। माननीय राज्यपाल,उ.प्र. को भी वैदिक साहित्य भेंट किया गया।

महोत्सव के ६वें दिन नेपाल के शांति एवं पुनर्निमाण मंत्री श्री एकनाथ ढकाल जी को कार्यालय के लेखा लिपिक श्री भुवनचन्द्र पाठक जी द्वारा नेपाली सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया। सभी उत्तराखण्ड महोत्सव के पदाधिकारियों आदि ने वैदिक साहित्य के स्टाल की भूरि भूरि प्रशंसा की।

आर्य समाज खेडा अफगान का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज खेडा अफगान सहारनपुर का दो दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक २६ व २७ मार्च २०१६ को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। प्रातः काल यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ जिसके यजमान श्री अनिरूद्ध कुमार जी सपत्नीक थे। उसके पश्चात आचार्य आशीष जी देहरादून का सारगर्भित प्रवचन कर्मफल जैसे महत्वपूर्ण तथ्य को लेकर हुआ।

कार्यक्रम में डा. अशोक कुमार गुप्त, श्री यशपाल यादव, श्री शशिकांज आर्य, श्री सुरेन्द्र कुमार, श्री राजकुमार आदि, श्री महीपाल आर्य, श्री कुंवर पाल आर्य, श्री राजेश आर्य, श्री श्रवण कुमार, श्री श्याम सिंह आर्य, श्री श्याम लाल आर्य, शशि प्रभा जी, पूनम जी, अनीता जी, प्रियंका जी, श्री करण सिंह जी, श्री राजपाल आर्य, श्री देवेन्द्र कुमार आर्य आदि पधारें।

उत्सव में काफी संख्या में आर्य नर नारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

मंत्री, आर्य समाज खेडा
अफगान, सहारनपुर

समस्या आपकी समाधान हमारा

आदरणीय डॉ साहब,

सादर नमस्ते!

आर्य मित्र में प्रकाशित आपकी ''समस्या आपकी समाधान हमारा'' लेख का मैं नियमित पाठक हूँ। आपके द्वारा दिये गये समाधान से मैं व मेरा परिवार लाभान्वित होता रहता है। मेरी आयु इस समय लगभग ७५ वर्ष है। मैं विगत ७-८ वर्षो से बांये हाथ पैर की फालिज से पीडित हूँ।

अनेकों आयुर्वेदिक, अंग्रेजी, व होम्योपैथिक दवायें खा चुका हूँ परंतु कोई खास लाभ नहीं हुआ। बड़ी आशा के साथ मैं अब अपनी समस्या को आपके समक्ष रख रहा हूँ। आशा है आप मेरी इस समस्या का उचित समाधान करने का कष्ट करेंगे।

आपका
ए.बी.शर्मा
इटावा

समाधान-

प्रिय शर्मा जी,

आपने अपनी जो समस्या बताई है वह आपके दिमाग से संबंधित है। आप पूर्व में उच्च रक्तचाप से पीडित रहे होंगे। नियमित परहेज व दवा का नियमित सेवन न करने के कारण अचानक आपका रक्तचाप बढ़ गया होगा जिसके कारण आपके दिमाग के दांयी तरफ की नसे फटने व वहां एकत्र रक्त स्राव न होकर थक्का जमने के कारण आपके शरीर के बांये अंग में फालिज का असर हो गया है। आप मधुमेह से पीड़ित है अथवा नहीं। यह भी आपने स्पष्ट नहीं किया है। यदि उसी समय आपको उचित चिकित्सा प्राप्त हो गयी होती तो आपको इतने लम्बे समय तक इस समस्या से ग्रसित नहीं रहना पड़ता। अस्तु

आपने कौन कौन सी दवायें अब तक ली है यह भी स्पष्ट नहीं किया तथा वर्तमान में कौन कौन सी दवायें ले रहे हैं यह भी नही बताया है। आशा है आप अब खाने पीने में विशेष मानके रख रहे होंगे।

आपके बांये हाथ पैर में सुन्नता तो नहीं है। यह भी स्पष्ट नहीं किया है यदि उसमें सुन्नता नहीं है तो आप मोटर नर्व्स की निष्क्रियता के कारण बांये हाथ पैर को नहीं हिला पा रहे है। इसके लिए आपको निरन्तर फिजियोथिरैपी की आवश्यकता है। आप अपने बांये हाथ पैर व शरीर में महानारायण तैल की नीचे से ऊपर की ओर धीरे धीरे इस प्रकार मालिश करायें कि तेल शरीर में प्रवेश कर जायें। किसी आयुर्वेदिक पंच कर्म विशेषज्ञ की देख रेख में प्रभावित बांये अंगों का दशमूलम्बाव से नाड़ी स्वेद का भी उपयोग आपकी समस्या का निवारण कर सकता है।

आयुर्वेदिक औषधियों में किसी अच्छी कंपनी द्वारा निर्मित बृहत वात चिन्तामणि की एक एक गोली चबाकर दिन में दो बार शहद के साथ ले सकते हैं। इसके अतिरिक्त श्री दशांग गुग्गुल की २-२ गोली दिन में तीन बार दशमूलारिष्ट (रसायन अधिकार) की २० मिली की मात्रा चाय में मिलाकर लेने से भी फायदा होगा। भोजन के पश्चात अश्वगंधारिष्ट १५ मिली., अर्जुनारिष्ट १५ मिली. की मात्रा में बराबर जल के साथ शीशे के गिलास में लेना भी लाभप्रद है।

घर में प्रतिदिन औषधियुक्त (अगर-तमर-गिलोय, गुग्गुल-चन्दन- जटामासादि) सामग्री से सायंकाल दैनिक हवन के मंत्रों के साथ साथ शिव संकल्प मंत्रों से यज्ञ करना भी आपकी समस्या के समाधान में लाभप्रद होगा।

आशा है आपने अपने सिर का सी.टी.स्कैन/एम.आर.आई व रक्त की जांचे भी अवश्य करवायी होंगी। उन्हें अपने सम्मुख रख मुझसे सायं ६ से रात्रि ६ बजे के मध्य दूरभाष पर वार्ता कर विशेष परामर्श प्राप्त कर सकते हैं।

-डॉ. भानु प्रकाश आर्य
पूर्व वरिष्ठ परामर्शदाता चिकित्सक
राज.आयु.महाविद्यालय एवं चिकित्सालय
लखनऊ विश्व विद्यालय, लखनऊ
चलभाषः 9415158571

यज्ञशाला एवं अतिथिशाला का लोकार्पण

आजमगढ़ जनपद के पुष्पनगर नामक ग्राम में स्व. श्री मेवा लाल आर्य जी के यशस्वी सुपुत्र श्री सुरेश चन्द्र आर्य ''प्रधान'' आर्य समाज कलकत्ता, १६ विधान सभा सरणी, कोलकाता-६ ने अपने पिताश्री की स्मृति में भव्य यज्ञशाला तथा अतिथिशाला का निर्माण करवाकर श्री मेवा लाल आर्य वैदिक योग साधना आश्रम न्यास को अर्पित किया। दिनांक २१, २२ व २३ फरवरी २०१६ को सामवेद पारायण यज्ञ के साथ इस यज्ञशाला एवं अतिथिशाला का लोकार्पण किया गया।

महोत्सव में आर्य समाज कलकत्ता से मंत्री दीपक आर्य, विवेक आर्य, रंजीत झा, मदन लाल सेठ, सुरेश कुमार अग्रवाल, संतोष सेठ आदि सज्जन उपस्थित थे।

-रमेश विश्वकर्मा

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७ - आर्यमित्र १६ अप्रैल, २०१६ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ

एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दू... ...८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, ...४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

यज्ञशाला का उद्घाटन

आर्य समाज चौक जनपद बुलन्दशहर में दिनांक ८-४-२०१६ को नवनिर्मित यज्ञशाला का शुभारम्भ आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी एवं उप प्रधान डा. धीरज सिंह के द्वारा सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री वर्मा जी थे, उन्होंने नववर्ष की सभी को बधाई दी और नववर्ष के महत्व की प्रासंगिकता का उल्लेख किया तथा प्रकृति के बदलाव, ऋतुओं का आगमन आदि कारणों को विस्तारपूर्वक बताया।

इस अवसर पर प्रधान जी, मंत्री जी व उप प्रधान जी के आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के चुनाव में निर्विरोध चुने जाने पर हार्दिक अभिनन्दन किया गया। जिसमें श्री सुमन राघव जी, श्री संतोष राघव जी, श्री संजीव रामा जी आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ द्वारा किया गया जिसके ब्रह्म पं. नरेन्द्र वेदालंकार जी थे। प्रधानाचार्या डा.अनीता भारद्वाज ने नवनिर्मित यज्ञशाला में प्रतिदिन यज्ञ करने कराने का संकल्प लिया।

स्वागत समारोह

❖ आर्य समाज स्याना,बुलन्दशहर के प्रधान श्री नरेन्द्र रस्तोगी मंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री भगीरथ आर्य आदि ने प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी व उप प्रधान डा. धीरज सिंह को आयोजित समारोह में निर्विरोध चुने जाने पर बधाई दी व सम्मानपूर्वक माल्यार्पण किया।

❖ आर्य समाज खुर्जा, बुलन्दशहर में आयोजित स्वागत समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा व मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी का स्वागत डा. धीरज सिंह, श्रीवास्तव जी व श्री प्रदीप जी ने उत्साहपूर्वक किया।

❖ आर्य समाज पसवाडा बुलन्दशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा व उनकी टीम के तीसरी बार निर्विरोध चुने जाने पर स्वागत करते हुए पसवाडा आर्य समाज के प्रधान श्री धर्मपाल सिंह जी, मंत्री श्री प्रमोद कुमार आर्य, उप प्रधान श्री उदमन सिंह आदि ने हार्दिक अभिनन्दन किया।

❖ आर्य समाज जिला सभा बुलन्दशहर में श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी के सम्मान समारोह में श्री रामकुमार आर्य, श्री सुनील आर्य, श्री अनिल आर्य, श्री शान्ति शरण राठी जी आदि ने श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी के विगत कार्यो का उल्लेख करते हुए सम्मानित किया।

आर्य समाज शामली में स्थापना दिवस एवं अभिनन्दन समारोह के चित्र

आर्य समाज चौक, बुलन्दशहर के कतिपय चित्र

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित

लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।